UPA NATIONAL E-JOURNAL
Interdisciplinary Peer-Reviewed Indexed Journal
Special Issue : Volume -10 : Issue-1 (January-2024)
ISSN
2455-4375

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और पुस्तकालय

समीर बडगुजर
विद्यार्थी,
सी .पी एंड बेरार इ.स. कॉलेज तुलसीबाग़ महल,
नागपुर
Email:sameerbadgujar8007@gmail.com

सारांश :

यह शोध आलेख राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में पुस्तकालय की भूमिका और अपेक्षाओं को निर्धारित करता है। एनईपी 2020 में इन अपेक्षाओं का स्पष्ट रूप से उल्लेख नहीं किया गया है। मेरी राय में, गुणवत्तापूर्ण संग्रह और डिजिटल संसाधनों वाले पुस्तकालयों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करनी चाहिए। आजीवन सीखना, राष्ट्रीय विरासत का संरक्षण और पढ़ने की संस्कृति विकसित करना कुछ ऐसे क्षेत्र हैं, जहां एनईपी ने पुस्तकालयों के महत्व पर प्रकाश डाला है। इसके अलावा, लाइब्रेरियनशिप के माध्यम से, पुस्तकालय पेशेवरों को अतिरिक्त क्षेत्रों का पता लगाना चाहिए जहां वे उच्च शिक्षा को अधिक मजबूत और सार्थक बनाने में योगदान दे सके। यह शोध आलेख के द्वारा उच्च शिक्षा क्षेत्र में पुस्तकालयों को अनुसंधान सहायता और छात्र सहायता केंद्रों के रूप में विकसित और जिम्मेदार संरक्षक की भूमिका को भी केंद्रित करता है।

मूलशब्द: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, सिद्धांत और विशेषताएं, पुस्तकालय, तार्किक क्षमता

प्रस्तावना :

भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 प्रकाशित कर यह शैक्षिक क्षेत्र के विचारकों को भविष्य की योजना का विषय प्रस्तुत करता है । शिक्षा नीति को चार भागों में विभाजित किया गया है: स्कूली शिक्षा, उच्च शिक्षा, आजीवन शिक्षा और अन्य महत्वपूर्ण विषय के क्षेत्र को केंद्रित किया गया है। अकादमिक पुस्तकालयों को अपनी भूमिका एनईपी से ही निभाई जानी चाहिए। इसमें पर्याप्त क्षेत्र का आभाव है और इस भूमिका को और अधिक स्पष्ट रूप से समझने के लिए कुछ और विस्तार होना चाहिए था। शैक्षणिक पुस्तकालयों द्वारा वहन की जाने वाली जिम्मेदारी एनईपी में निहित है, और एनईपी 2020 के सिद्धांत और विशेषताएं को आगे समझा जा सकता है।

अध्ययन का उद्देश्य – इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य उच्च शिक्षा की मुख्य विशेषताओं पर प्रकाश डालना है, तथा नई शिक्षा नीति 2020 और पुस्तकालयों के महत्त्व पर प्रकाश डालता है, साथी ही में प्राथमिक और माध्यमिक डेटा का विश्लेषण करना है। इसके अन्य मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं।

- नई शिक्षा नीति 2020 को पेश करना।
- नई शिक्षा नीति 2020 में उच्च शिक्षा की मुख्य विशेषताओं को देखना।
- नई शिक्षा नीति 2020 और पुस्तकालयों की महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में जानना।

- उच्च शिक्षा क्षेत्र में पुस्तकालयों को सहायता के रूप में जानना और प्रस्तुत करना।

शोद विधि :

यह आलेख द्वितिय्क स्रोतों के माध्यम से लिखा गया है। उच्च शिक्षा और पुस्तकालयों के विशेष संदर्भ के साथ एक महत्वपूर्ण दृष्टिकोण के रूप में नई शिक्षा नीति 2020 के अध्ययन पर भी ध्यान केंद्रित करता है। इस हेतु विभिन्न शोध समीक्षा एवं पुस्तकों से तथ्यों का संकलन किया गया है।

शोध समीक्षा :

यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति 21वीं सदी की पहली शिक्षा नीति है। एनईपी का उद्देश्य 2020 हमारे देश की कई बढ़ती विकासात्मक आवश्यकताओं को संबोधित करने के लिए है। यह एनईपी नीति प्रस्तावित करती है विनियमों सहित वर्तमान शिक्षा संरचना के सभी पहलुओं का संशोधन और पुनरुद्धार शासन, एक नई प्रणाली बनाने के लिए जो 21वीं सदी के प्रेरणादायक लक्ष्यों के अनुरूप होगी स्कूल स्तर और उच्च शिक्षा स्तर पर शिक्षा प्रणाली। नीति का उद्देश्य: शिक्षा नीति एवं व्यवस्था का उद्देश्य अच्छे इंसान का विकास करना है करुणा और सहानुभूति, साहस और लचीलापन रखने वाले तर्कसंगत विचार और कार्य करने में सक्षम प्राणी, नैतिक सिद्धांतों और मूल्यों की ध्वनि के साथ वैज्ञानिक स्वभाव और रचनात्मक कल्पना। इसका उद्देश्य उत्पादन करना है, एक समतामूलक, समावेशी और बहुलवादी समाज के निर्माण के लिए उत्पादक, संलग्न, चयनात्मक और योगदान देने वाले नागरिक भारतीय संविधान द्वारा परिकल्पित. पिछली नीतियां, शिक्षा पर का कार्यान्वयन काफी हद तक मुद्दों पर केंद्रित रहा है।

- शिक्षा के सभी स्तरों पर सार्वभौमिक पहुंच सुनिश्चित करना।
- स्कूल पाठ्यक्रम और शिक्षाशास्त्र में सुधार।
- सभी पाठ्यक्रमों में विविधता का सम्मान और स्थानीय संदर्भ का सम्मान।
- रचनात्मकता और आलोचनात्मक सोच, तार्किक निर्णय और नवाचार को प्रोत्साहित करना।
- बहुभाषावाद और भाषाओं की शक्ति।
- प्रौद्योगिकी का व्यापक उपयोग।
- शिक्षार्थी के पास अपने सीखने के प्रक्षेप पथ और कार्यक्रम चुनने की क्षमता हो।
- मूल्यांकन में सुधार।
- उत्कृष्ट शोध और समीक्षा जारी करना।
- न्यायसंगत और समावेशी शिक्षा।
- प्रभावी और उन्नत स्कूल प्रशासन।

पुस्तकालय - अनुसंधान सहायता केंद्र :

एनईपी ने कुछ विश्वविद्यालयों और संस्थानों में अनुसंधान के महत्व पर भी जोर दिया। एनईपी में केवल इतना उल्लेख है कि पुस्तकालयों को उपयोगकर्ताओं द्वारा अपेक्षित सभी आवश्यक सुविधाओं से सुसज्जित किया जाना चाहिए। पुस्तकालयों में संगठनों की अनुसंधान गतिविधियों को मजबूत करने की अपार संभावनाएं हैं। जमीनी स्तर के नवप्रवर्तकों और युवा उद्यमियों को अक्सर नवप्रवर्तनों का एक पूल बनाने और पर्यावरण की दृष्टि से टिकाऊ उत्पादों और सेवाओं को डिजाइन करने के लिए सार्वजनिक और संस्थागत पुस्तकालयों के समर्थन की आवश्यकता होती है। देश के हर जिले में कुछ सार्वजनिक और संस्थागत पुस्तकालयों को जमीनी स्तर के नवप्रवर्तकों, युवा उद्यमियों और रचनात्मक अर्थव्यवस्था में अन्य लोगों द्वारा किए गए अनुसंधान की सुविधा के लिए अनुसंधान सहायता केंद्रों के रूप में विकसित किया जाना चाहिए। विषय का मूल ज्ञान होना और किसी भी विषय पर गहराई से जाने की इच्छा और विषय में कुछ जोड़ने की लालसा एक शोधकर्ता होने का आवश्यक गुण है। पुस्तकालय और सूचना केंद्र ई-संसाधनों, संदर्भ प्रबंधन पर मार्गदर्शन और सूचना की पुनर्प्राप्ति पर विशेष ध्यान देने के साथ गुणात्मक संसाधन प्रदान करके शोधकर्ताओं के जुनून को तेज कर सकते हैं। इस संबंध में विशिष्ट पुस्तकालयाध्यक्षता अत्यधिक सहायक हो सकती है। अनुसंधान क्षेत्रों में से एक है जहां पुस्तकालय एक विशेष अभियान चलाया जा सकता है। अनुसंधान पद्धति, सांख्यिकीय विश्लेषण, ओपन-सोर्स प्रौद्योगिकी, अनुसंधान के लिए सहायक उपकरण, संदर्भ प्रबंधन और पुनर्प्राप्ति तकनीकों के साथ एक अलग अनुसंधान लाइब्रेरियन की आवश्यकता हो सकती है।

बहु-विषयक संगठन के रूप में कार्य करना :

स्नातक छात्र उच्च स्तर का शोध नहीं कर सकते हैं, विश्वविद्यालय इस स्तर पर अनुसंधान गतिविधियों को रेखांकित कर रहे हैं। इन विश्वविद्यालयों को 'अनुसंधान-गहन विश्वविद्यालय' कहा गया है जो नियमित शिक्षण प्रथाओं के माध्यम से काफी शोध करेंगे और ज्ञान प्रदान करेंगे। पुस्तकालय और सूचना केंद्रों में विश्वविद्यालयों को बहु-विषयक संगठनों में बदलने की अपार क्षमता है। सभी विश्वविद्यालयों के लिए प्रक्रिया 2040 तक पूरी होने की उम्मीद है। तकनीकी संस्थानों द्वारा सामाजिक विज्ञान और मानविकी के क्षेत्र का पता लगाया जाना चाहिए, जबकि सामाजिक विज्ञान और मानविकी के लोगों द्वारा विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर उचित ध्यान दिया जाना चाहिए। यहां पुस्तकालय पेशेवरों को बहु-विषयक चरित्र के रूप में विकसित होना होगा। यह तभी संभव हो सकता है जब वे विषय क्षेत्र की सीमाओं को पार कर सकें। केवल संसाधनों की खरीद और उनका संरक्षण ही पुस्तकालयों का एकमात्र कर्तव्य नहीं हो सकता, हालाँकि इन गतिविधियों में बहुत अधिक समय, धन और ऊर्जा खर्च होती है। उन्हें गुणवत्तापूर्ण पाठ्यपुस्तकों और विचार-प्रेरक संदर्भ पुस्तकों के संगठित भंडारगृह के रूप में कार्य करना चाहिए।

शैक्षणिक नैतिकता -

आजकल, सूचना साक्षरता एक लोकप्रिय कार्यक्रम है, क्योंकि पुस्तकालयों ने इसे सख्ती से क्रियान्वित करना शुरू कर दिया है। सूचना साक्षरता का पाँचवाँ मानक है, सूचना साक्षर छात्र सूचना के उपयोग से जुड़े कई

आर्थिक, कानूनी और सामाजिक मुद्दों को समझता है। नैतिक और कानूनी रूप से जानकारी तक पहुँचता है और उसका उपयोग करता है। पुस्तकालय पेशेवरों द्वारा छात्रों के नैतिक समर्थन के संबंध में अत्यधिक प्रासंगिक है। पुस्तकालयों को छात्रों को सूचना और सूचना प्रौद्योगिकी से जुड़े कई नैतिक, कानूनी और सामाजिक आर्थिक मुद्दों को समझाना चाहिए। उन्हें छात्रों के बीच इस मानक के महत्व को आत्मसात करने के लिए तंत्र डिजाइन करना चाहिए। उन्हें पोर्टल पर संस्थागत साहित्यिक चोरी नीति को उजागर करना होगा। उन्हें साहित्यिक चोरी पर एक नीति बनाने की पहल करनी चाहिए जहां ऐसी नीति अस्तित्व में नहीं है और इसे लागू करने के लिए प्रशासन के साथ सहयोग करना चाहिए और साथ ही यू जी सी द्वारे प्लागारिसिन (साहित्यिक चोरी) के नियमो का पालन करना चाहिए उन्हें सभी प्रकार के हितधारकों तक इसे पहुंचाने के लिए सूचना नैतिकता का उत्कृष्ट ज्ञान होना चाहिए। गुणात्मक ई-संसाधनों की सदस्यता और, इसके अलावा, छात्रों, शोधकर्ताओं और संकाय सदस्यों के साथ एक मजबूत जुड़ाव शैक्षणिक शिष्टाचार का पालन करते हुए आवश्यक जानकारी तक पहुंचने में उनकी मदद करने के लिए अत्यधिक आवश्यक है। उपयोगकर्ताओं को संदर्भ प्रबंधन की वैज्ञानिक परंपरा भी सिखानी है। शैक्षणिक और प्रकाशन नैतिकता व्यवस्थित और सहयोगात्मक प्रयासों के माध्यम से नैतिक चिंता का समाधान कराया जा सकता है।

छात्र सहायता प्रदान करना :

एनईपी अच्छी तरह से सुसज्जित पुस्तकालयों को इष्टतम शिक्षण वातावरण का एक अभिन्न अंग मानता है। एनईपी ने शिक्षा प्रणाली के चार घटकों पाठ्यक्रम, शिक्षाशास्त्र, निरंतर मूल्यांकन और छात्र समर्थन पर भी जोर दिया। उन तक पहुँचने के लिए गुणात्मक संसाधन और व्यवस्थित बुनियादी ढाँचा मजबूत छात्र समर्थन प्रदान करते हैं। अब पुस्तकालयों को शोध सहायता केन्द्र के रूप में स्थापित करना होगा। यह मूल संस्थान की जिम्मेदारी होगी कि वह महत्वपूर्ण छात्र सहायता केंद्र स्थापित करे और उन्हें अधिक सक्षम और कुशल बनाने के लिए पर्याप्त धन का प्रावधान करे। छात्रों को सहायता प्रदान करते समय ई-संसाधनों की खरीद, उन तक आसान पहुंचे, दूरस्थ पहुंच और अच्छी तरह से सुसज्जित वाचनालय पुस्तकालयों के लिए आवश्यक हैं। शिक्षण-अधिगम गतिविधियों को पुस्तकालयों से गुणवत्तापूर्ण संसाधनों और उनके उपयोग में सहायता के साथ अतिरिक्त सहायता की आवश्यकता होती है। ऐसी गतिविधियों से उनमें वैज्ञानिक सोच विकसित करने में मदद मिलेगी। पुस्तकालयों को उन्नत पठन के लिए उपयुक्त और प्रेरक माहौल बनाना चाहिए। उन्हें कक्षाओं और प्रयोगशालाओं में और शिक्षकों, छात्रों, शोध विद्वानों और लेखकों को आवश्यकतानुसार दस्तावेज़ उपलब्ध कराने चाहिए। उपयोगकर्ताओं को यह महसूस करना चाहिए कि पुस्तकालय वह स्थान है जहां वे अपनी रुचि के विषय पर अतिरिक्त सामग्री पा सकते हैं।

पढ़ने की संस्कृति का विकास :

एनईपी का लक्ष्य पूरे भारत में पढ़ने की संस्कृति को बढ़ावा देना है। इसके लिए राष्ट्रीय पुस्तक प्रोत्साहन नीति बनाई जाएगी। विद्यालयों के पुस्तकालयों को समृद्ध करना, वंचित क्षेत्रों में ग्रामीण पुस्तकालयों एवं पठन कक्षों की स्थापना करना, भारतीय भाषाओं में पठन सामग्री उपलब्ध कराना, बाल-पुस्तकालय एवं चल-

पुस्तकालय खोलना, पूरे भारत में और विषयों पर सामाजिक पुस्तक क्लबों की स्थापना व शिक्षण संस्थानों और पुस्तकालयों में आपसी सहयोग बढ़ाना। सार्वजनिक पुस्तकालय पठन-पाठन को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। एनईपी अन्य प्रतिष्ठानों के साथ सार्वजनिक पुस्तकालयों और अतिरिक्त डिजिटल पुस्तकालयों का एक नेटवर्क बनाने पर जोर देता है। पुस्तकालय उच्च शिक्षा और अनुसंधान का एक अभिन्न अंग बन गए हैं। हम कल्पना कर सकते हैं, कि स्कूली शिक्षा उनके बिना जीवित नहीं रह सकती। पुस्तकालयों की भूमिका महत्वपूर्ण है, विशेषकर गैर-स्कूली विभिन्नता। पुस्तक संघ अतिरिक्त पढ़ने और समन्वय की सुविधा प्रदान कर सकते हैं।

सार्वजनिक पुस्तकालय, जनता। उन्हें पाठकों की सलाहकार सेवाओं, अनुशंसा सेवाओं को पढ़ने, नुस्खे सेवाओं को पढ़ने, या परामर्श सेवाओं को पढ़ने से शुरू करना चाहिए। एनईपी भारतीय भाषाओं से अनुवादित कार्यों को भी बहुत महत्व देती है और सभी पुस्तकें केवल सार्वजनिक पुस्तकालयों की पहल से ही उपलब्ध हो सकती हैं। वर्तमान में सार्वजनिक पुस्तकालयों की स्थिति कमजोर है। उनके पास कई उपयोगकर्ताओं, मानव संसाधनों, संदर्भ स्रोतों और आईसीटी एव आधारभूत सरचना की ढांचे की कमी हो रही है। राज्य सरकारों को हर राज्य में सार्वजनिक पुस्तकालय प्रणाली को मजबूत करने की आवश्यकता है। विश्वविद्यालय और केंद्र से वित्त सहायता से अलग-अलग सार्वजनिक पुस्तकालय खोल सकते हैं और पाठकों को विकसित करने और पढ़ने की आदतों को विकसित करने के लिए उच्च शिक्षा को अतिरिक्त पढ़ने में सहायता प्रदान कर सकते हैं। केंद्र और राज्य सरकारों को पूरे भारत में सभी प्रकार के उपयोगकर्ताओं के लिए गुणवत्तापूर्ण ई-पुस्तकों की उपलब्धता का ध्यान रखना चाहिए। फिर भी, उचित वित्त सहायता, कुशल कर्मचारियों की भर्ती और प्रशिक्षण अधिक महत्व रखते हैं। भविष्य में, एनईपी के संदर्भ में इन कारकों का प्रबंधन अच्छी तौर पर हो सकता हैं।

तार्किक क्षमता बढ़ाना :

उच्च शिक्षा देश के विकास की रीढ़ है। एनईपी का लक्ष्य अच्छे, विचारशील, सर्वांगीण और रचनात्मक व्यक्तियों का विकास करना है। यह नीति भारत की शिक्षा प्रणाली के सामने आने वाली कुछ चुनौतियों की ओर इशारा करती है। यहां कुछ क्षेत्र हैं जहां पुस्तकालयाध्यक्ष शिक्षा प्रणाली को सुदृढ़ करने के लिए कुछ कर सकते हैं। एनईपी ने इस बात पर जोर दिया है कि तार्किक क्षमताओं को बढ़ाने को कम महत्व दिया जाता है। । उच्च शिक्षा में पुस्तकालय और सूचना केंद्र विभिन्न विषयों पर अतिरिक्त पढ़ाई का विस्तार करते हैं। ये सभी छात्रों की तार्किक क्षमताओं को बढ़ाने के जबरदस्त प्रयास हैं। हालाँकि, पुस्तकालयाध्यक्षों के पास अपनी सेवाओं के माध्यम से हितधारकों की तार्किक क्षमताओं को प्रभावित करने के लिए आवश्यक योग्यताएँ होनी चाहिए। इसलिए, उन्हें अपनी ज़रूरत को समझना चाहिए, जिस पर सोच-समझकर ध्यान देने की ज़रूरत है। तार्किक क्षमता आलोचनात्मक सोच, चिंतनशील सोच और भावनात्मक बुद्धिमत्ता का केंद्र है। यह पुस्तकालय पेशेवरों की मुख्य नेतृत्व क्षमता का भी एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। पढ़ने के महत्व के बारे में समझाना तार्किक क्षमताओं को बढ़ाने का एक सार्थक प्रयास हो सकता है।

पुस्तकालय आजीवन सीखने के केंद्र के रूप में :

संस्थाएँ केवल औपचारिक शिक्षा प्रदान कर सकती हैं। उचित शिक्षा पूरी करने के बाद, जब किसी को

खुद का पता लगाना होता हैं। या पारंपरिक सीमाओं से परे विकास करना होता है, तो पुस्तकालय प्रभावी साबित होते हैं। पुस्तकालय कभी भी जाति, पंथ या लिंग के आधार पर सदस्यता से इनकार नहीं करेगा, या यह इस बात पर विचार नहीं करेगा कि कोई नियमित छात्र है या नहीं। पुस्तकालयों के पास किसी व्यक्ति को उसके अध्ययन को आगे बढ़ाने में मदद करने के लिए अध्ययन सामग्री होती है। इसके विपरीत, कक्षा शिक्षण एक विशिष्ट समय अवधि और उम्र तक सीमित है। इसलिए, आजीवन सीखने में पुस्तकालय बहुत प्रभावशाली रहे हैं। काम, अनुभव, जुनून और व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा आजीवन काम करने की इच्छा को प्रभावित करते हैं। फिर भी, अनौपचारिक शिक्षा एक प्रक्रिया बन जाती है, जब इसे एक प्रक्रिया माना जाता है। ज्ञान-संचालित समाज के निर्माण के लिए आजीवन सीखना बुनियादी है। हालाँकि, हमें वयस्क शिक्षा और आजीवन सीखने के बीच अंतर करने के लिए पर्याप्त बुद्धिमान होना चाहिए। सार्वजनिक पुस्तकालयों पर उचित ध्यान और महत्व दिया जाना चाहिए, ताकि वे क्षेत्रीय शैक्षणिक पुस्तकालयों के साथ सहयोग करके कई नवीन सेवाएँ शुरू कर सकें।

सांस्कृतिक विरासत के संरक्षक :

पुस्तकालय लंबे समय से सांस्कृतिक विरासत के भंडार के रूप में काम करते रहे हैं। उन्हें भारत के गौरवशाली इतिहास, संस्कृति, पारंपरिक ज्ञान, कला, भाषाओं और परंपरा को संरक्षित करना चाहिए। यह जिम्मेदाराना हिरासत का कार्य है। यह दस्तावेज़ों के रूप में होगा जो वर्तमान सभ्यता को पिछली सभ्यता से जोड़ेगा। अब पुस्तकालयों को सांस्कृतिक अभिव्यक्ति और विरासत का केंद्र माना जाता है। सामाजिक पूंजी के निर्माण, संस्कृति, सामाजिक संस्कृति और मानव की उच्च आकांक्षाओं और संपर्क को बढ़ावा देने के लिए पुस्तकालय संस्थानों और भौतिक स्थानों के रूप में आवश्यक है। विशेषकर क्षेत्रीय स्तर पर डिजिटलीकरण का महत्व बढ़ाना होगा। पुस्तकों और धारावाहिकों को डिजिटल रूप में परिवर्तित करने के लिए पुस्तकालयों को बड़े पैमाने पर डिजिटलीकरण करना चाहिए। डिजिटलीकरण के लिए दस्तावेजों का चयन, सामग्री निर्माण, तकनीकी बुनियादी ढांचे और संगठनात्मक बुनियादी ढांचे, कागजी दस्तावेजों के रूप में सांस्कृतिक विरासत के डिजिटलीकरण कार्य के लिए अधिक महत्वपूर्ण हैं। पुस्तकालयों को इनके साथ काम करना चाहिए एक द्विपक्षीय और बहुपक्षीय संरचना और समझौता बनाकर सांस्कृतिक संस्थान जो ज्ञान की उन्नति और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के लिए स्वाभाविक सहयोगी होगी। इसके अलावा, पुस्तकालयों में सांस्कृतिक विरासत को प्रसारित करने के लिए कार्यक्रम और सेवाएँ होनी चाहिए।

निष्कर्ष - एनईपी 2020 सीखने के परिदृश्य को बदलने, शिक्षा को समग्र और रोडमैप बनाने के लिए दार्शनिक मार्गदर्शन प्रदान करना आत्मनिर्भर भारत के लिए मजबूत आधार बनाने के लिए भारत में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने वाली प्रणाली और भविष्य की योजना सहित संभावना का मार्ग प्रशस्त होगा परिवर्तनकारी सुधार और यह पांच अन्योन्याश्रित मूलभूत स्तंभों अर्थात् एक्सेस, इक्विटी, पर बनाया गया है। गुणवत्ता, और सामर्थ्य। यद्यपि पुस्तकालयों की पारंपरिक भूमिका एनईपी में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है और विशिष्ट है, कुछ अपवादों को छोड़कर, अकादमिक पुस्तकालयों से अपेक्षाओं का उल्लेख नहीं किया गया है। हालाँकि, ये उम्मीदें अंतर्निहित हैं और समझने योग्य हैं। कुछ हद तक सार्वजनिक पुस्तकालयों का महत्व रहा है। फिर भी, पुस्तकालयाध्यक्षों को एनईपी के संदर्भ में अपनी भूमिका की पहचान करनी चाहिए। खेलने के अलावा पारंपरिक भूमिका, सभी प्रकार के

पुस्तकालयों को संज्ञानात्मक क्षमताओं को विकसित करने, छात्रों की आत्म-प्रभावकारिता बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए, और उन्हें आजीवन शिक्षार्थी बनने में सक्षम बनायें।

एनईपी 2020 में पुस्तकालयों की पारंपरिक भूमिका काफी स्पष्ट और उजागर है, लेकिन कुछ अपवादों को छोड़कर, अकादमिक पुस्तकालयों से विशिष्ट अपेक्षाओं का उल्लेख नहीं किया गया है। ये अपेक्षाएँ अंतर्निहित हैं और समझने योग्य हैं। कुछ समय तक सार्वजनिक पुस्तकालयों के महत्व पर प्रकाश डाला गया है। फिर भी, पुस्तकालयाध्यक्षों को एनईपी 2020 के संदर्भ में अपनी भूमिका की पहचान करनी चाहिए। चूंकि अनुसंधान पर बहुत जोर दिया गया है, उच्च शिक्षा केंद्रों में पुस्तकालयों को खुद को अनुसंधान सहायता और छात्र सहायता केंद्र के रूप में स्थापित करना चाहिए। पारंपरिक भूमिका निभाने के अलावा, सभी प्रकार के पुस्तकालयों को तार्किक क्षमताओं को विकसित करने, छात्रों की आत्म-प्रभावकारिता बढ़ाने और उन्हें आजीवन सीखने वाले बनने में सक्षम बनाने का प्रयास करना चाहिए।

सन्दर्भ :

- राष्ट्र शिक्षा निति 2020 शिक्षा नई दिल्ली अक्सेसेड तारीख 25 नवंबर 2023
- https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_final_HINDI_0.pdf
- www.amarujala.com/education/nep-india-s-guiding-light-for-achieving-vision-of-g20-promoting-lifelong-learning-pradhan?pageId=1 अक्सेसेड तारीख 30 नवंबर 2023
- परिहार, प्रे (2020). *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एप्लाइड रिसर्च*. 6(9): 109-111
- Multidisciplinary Journal | International Journal of Applied Research (allresearchjournal.com)
- https://www.ugc.gov.in/searchresult.aspx?q=NEP+2020&cx=00045716740662012 7635%3afugsadtztkk&cof=FORID%3a9 अक्सेसेड तारीख 3 दिसंबर 2023
- https://www.ugc.gov.in/pdfnews/5294663_Salient-Featuresofnep-Eng-merged.pdf अक्सेसेड तारीख 14 दिसंबर 2023